शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

संगीत एवं मनोविज्ञान : संबंध एवं महत्व

प्राप्तिः 19.05.2024
स्वीकृतः 26.06.2024

डॉ० शम्पा चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी
संगीत (गायन) विभाग
वी०एम०एल०जी० कॉलेज, गाजियाबाद
ईमेलः *shampa1410@gmail.com*

30

सारांश

संगीत एवं मनोविज्ञान इन दोनों विषयों का सह–सम्बन्ध मुख्य रूप से सुनना व ध्वनि अभिव्यक्ति से है। सभी कलाओं में संगीत कला मनुष्य को आन्तरिक प्रकृति, भावनाओं एवं विचारों को अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित करती है। राग व उसमें निबद्ध रचनाएँ अद्भुत सौन्दर्यात्मक इकाइयाँ है, जो मनुष्य के संवेगों पर प्रभाव डालती है। राग एवं उसमें परिलक्षित रस का अध्ययन ही हमे मनोविज्ञान के क्षेत्र में ले जाता है। जनसामान्य व्यक्ति सांगीतिक ध्वनियों को सुनकर अपनी भावनाओं को उतार–चढ़ाव के साथ ही अभिव्यक्त करता है। अतः संगीत मानव संवेगों को इतना हिला देता है कि मनुष्य विभिन्न रंगों व रूपों में उनका सफलतापूर्वक प्रस्तुतीकरण कर सकता है।

मुख्य बिन्दु

कला, संस्कृति, संगीत, मनोविज्ञान, संप्रेषण।

कला की अभिव्यक्ति मानव जीवन में सृष्टि के प्रादुर्भाव के समय से ही रही। है। अपने अन्तर भावनाओं को व्यक्त करने के लिए मनुष्य ने विभिन्न माध्यमों का प्रारम्भ से ही सहारा लेना शुरू किया। अपने इर्द–गिर्द घटने वाली हर घटनाओं को चाहे वह सुख प्रदत्त हो या दुख प्रदत्त, उसे व्यक्त करने मे मानव ने प्रकृति का सशक्त सहारा भी सृष्टि के उद्भव काल से ही लेना प्रारम्भ किया है। यह मानव जाति की विकसित हो रही मानसिकता ही थी, कि दुखः के समय रोना या विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा दुखः प्रकट करना तथा सुख की घटनाओं में विभिन्न प्रकार की हर्षयुक्त ध्वनि उत्पादित कर अपनी भावनाओं को व्यक्त करता आया है।

कालांतर में सृष्टि के विकास के साथ साथ संगीत का भी विकास हुआ। स्वर और लय से अविभूत संगीत ने विश्व इतिहास के प्रत्येक काल में अपनी विशिष्टता से मानव सभ्यता एवं संस्कृति को प्रभावति किया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संगीत की महत्ता प्रारम्भ से ही मानी जाती है। चाहे वह लड़ाई का मैदान ही क्यूँ ना हो एक विशेष प्रकार का संगीत प्रस्तुत होते ही उस भावना का

आभास होने लगता है। हर उन भावनाओं को व्यक्त करने के पीछे की कुछ विशिष्ट मानसिकता का आभास होता है, जिसके माध्यम से अलग अलग प्रकार की भावनाये व्यक्त होती है। संगीत मानव जीवन के हर पहलू को प्राचीन काल से ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती आ रही है। समाज के प्रत्येक कार्य में और संगीत की महत्ता सभी को ज्ञात है। वैवाहिक कार्य हो या धार्मिक कार्य, लडाई का मैदान हो या शांति के लिए कार्य या फिर कोई भी संस्कार संगीत की आवश्यकता एवं महत्ता प्रत्येक स्थान पर है।

संगीत की महत्ता निम्न पाँच अंगों के अन्तर्गत विशेष रूप से उल्लेखनीय है–

1. दार्शनिक 2. मनोवैज्ञानिक 3. सामाजिक 4. शैक्षणिक 5. अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

जीवन के दर्शन, धर्म से संगीत सीधे जुड़ा हुआ है। साकार, निर्गुण, परब्रह्मजी प्राप्ती तो नाद साधना के द्वारा ही मानी गयी है। और भक्ति मार्ग से ओत–प्रोत संगीत मोक्ष प्राप्ति का सुगम साधन है, जो हमारे दर्शन की मूल धारणा है।

समाज से सीधे सम्बन्धित है हमारा संगीत। मानव जीवन का प्रत्येक क्षण संगीत से आधारित है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक संगीत के ताने बाने में आबद्ध है। जहाँ तक मनोवैज्ञानिक महत्ता का संबन्ध संगीत शिक्षण से है। वैसे बहुत कुछ यह संगीत के प्रदर्शन पक्ष को भी प्रभावित करता है। क्योंकि संगीत चूँकि एक प्रदर्शन कला है। अतः प्रदर्शन के लिए एक स्वस्थ मानसिकता एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से तैयारी भी अत्यंत आवश्यक है। शिक्षण से संबंधित होने का प्रमुख कारण यह भी है कि शिक्षा मनुष्य में संतुलित व्यक्तित्व के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसमें विद्यार्थी की प्रवृत्ति, रूचि, बुद्धिमत्ता इत्यादि सभी गुणों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण की आवश्यकता पर ध्यान दिया जाता है। इतना ही नही मनोवैज्ञानिक ढंग से संगीत शिक्षण में व्यवहार की भी अहम भूमिका रहती है। और यही व्यवहार संगीत के मनोविज्ञान के अन्तर्गत त्वरित प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है। यदि हम संगीत को मनोविज्ञान की दृष्टि से देखना चाहते है, तो इसके लिए हमें मनोविज्ञान के कुछ महत्वपूर्ण पक्षों या तत्वों को समझना आवश्यक है। मानवीय व्यवहार के पहलुओं को हम तीन भागों में बाँट सकते है। 1. ज्ञानात्मक पहलू, 2. क्रियात्मक पहलू, 3. भावनात्मक पहलू

ये तीनों पहलू एक दूसरे से एक प्रकार से अभिन्न रूप से गुंथे हुए हैं, और जब यह व्यवहार में आते हैं तो यह कहना अनुचित ना होगा कि व्यवहार ही इन तीनों पहलुओं का मिश्रण है। प्रत्येक मनुष्य के अपने मन मे कुछ न कुछ भाव आवश्यक होते है। कुछ में ये जनम लेते है, और कुछ में ये व्यक्त होते है और अपने मन के इन भावों व्यक्त करने में मनुष्य क्रियात्मक कला का सहारा लेता है। यह क्रियात्मक कला तब ही सफल होगी जब मनुष्य अपने भावनातक पहलू को अच्छे क्रियात्मक ढंग से व्यक्त करने में सफल होगा, जब उसको क्रियात्मक पहलू का पूर्ण ज्ञान होगा। इस प्रकार ये तीनों पहलू एक दूसरे से जुड़े है। भावनात्मक पहलू को क्रियात्मक रूप से व्यक्त करने का माध्ययम

संगीत है। संगीत का ज्ञान भी क्रियात्मक पहलू को सफल बनाने में महत्वपूर्ण है। अतः इसी ज्ञान का अध्ययन Psychology of Music में करना होता है।

आधुनिक युग में मनोविज्ञान जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए एक अचूक माध्यम के रूप में प्रयुक्त होता जा रहा है। जीवन के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पहलुओं को मनोविज्ञान प्रभावित किए बिना नही रह पाता है। शिक्षा दीक्षा के संबंध में भी प्राचीन काल से ही मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रथा है। विद्यार्थी की विषय के प्रति अभिरूचि, उसका बौद्धिक स्तर, ग्राहूय माध् यम, परिश्रम इत्यादि कुछ ऐसी बातें है जिनका ध्यान प्रारम्भ से ही रखा जा रहा है चाहे वह शिक्षा की प्राचीन गुरूकुल पद्धति हो या आधुनिक शैक्षणिक संस्थान। मनोविज्ञान को विषयगत् मान्यता प्राप्त होने के बाद विभिन्न क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता का ध्यान रखते हुए इसकी कई शाखाओं का निर्माण किया गया। शिक्षा से जुड़ी मनोविज्ञान की बातें शिक्षा मनोविज्ञान के नाम से जानी जाती है।

संगीत अपने आप में सृजन प्रक्रिया का द्योतक हैं। संगीत में प्रदर्शन हो या शिक्षा सृजनशीलता हमेशा विद्यमान रहती है। मनुष्य जबसे संगीत के संपर्क में आता है और शिक्षा प्रारम्भ करता है, सृजनात्मक प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। शिक्षण के क्रम में चाहे शिक्षक हो या शिक्षार्थी अथवा प्रदर्शन के क्रम में चाहे कलाकार हो या श्रोता, दोनों के लिए ही यह सष्जनशील है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में दोनों ही आनन्द विभोर होते है और आनन्द का सष्जन होता है। कलाकार और श्रोता तथा शिक्षक और विद्यार्थी दोनो ही सृजन की प्रक्रिया में बराबर के भागीदार होते है और आपस में सामंजस्य स्थापित करते है।

भारतीय दर्शन में जीवन का लक्ष्य 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' है। और यह तीनों तत्व संगीत मे विद्यमान है। संगीत में जो गाया या बजाया जाता है, वह सत्य माना जाता है। यह संगीत श्रोताओं के लिए कल्याणकारी और सुन्दर भी है। इस प्रकार जीवन के तीनों लक्ष्य संगीत में आ जाते है। सौन्दर्य से होने वाला प्रभाव हमारा मन का विषय है। इस सौंदर्य का प्रभाव हमारे मन पर संगीत द्वारा भी पड़ता है। संगीत में शान्ति, आनन्द, सुख तथा सन्तोष की प्रेरणा मिलती है। और इन्ही चारों शक्तियों द्वारा संगीत और मनोविज्ञान का परस्पर संबंध स्थापित होता है।

मनोविज्ञान संगीत के प्रदर्शन पक्ष को भी प्रभावित करता है। संगीत विषय का पूर्णतः सम्बन्ध मनोविज्ञान से है। एक सदस्य प्रयोक्ता ही श्रोता को अपनी कला से परितुष्ट करने की क्षमता रखता है। विभिन्न शास्त्रग्रन्थों में वाग्गेयकार के लक्षण बताते हुए अवधान पर अत्यंत बल दिया गया है अर्थात् स्थित चित्त से अवधानपूर्वक संगीतकर्ता को सीखने का सिद्धान्त स्वतः प्रमाणित है। साथ मनोविज्ञानिक स्तर पर कल्पना, स्मृति और सीखना यह संगीत और संगीतशास्त्र की आधार शिला है।

हंसराज भाटिया के अनुसार, "भारतीय रागों और रागिनियों का संबंध विशेष, शोक आदि के विशेष रागों से जगाये और प्रबल किये जा सकते है और मनोवैज्ञानिक प्रयोग कर संगीत मे नए किए जा सकते है।''

संदर्भतः उल्लेखनीय है कि स्मृति एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत सीखने, धारण करने, पुनः स्मरण करने एवं पहचानने की शक्ति समन्वित रहती है। इसलिए इसके चार मुख्य खण्ड माने गये है– सीखना, धारण करना, पुनः स्मरण करना, पहचानना आदि। संगीतशास्त्र ग्रंथो में मानसोल्लास, संगीतसमयसार, संगीतरत्नाकर, संगीतोपनिषद्सारोद्धार, संगीतराज, संगीतपारिजात आदि में शास्त्रज्ञों ने वग्गैयकार के गुणों में अवधान, सभा को जीने की क्षमता, प्रतिभा सम्पन्नता, सभा में उपस्थित श्रोताओं को रंजन प्रदान करने की क्षमता, रागद्वेश इत्यादि पूर्णतः मनोवैज्ञानिक तथ्य समावेश है।

इस प्रकार संगीत एवं मनोविज्ञान का सीधा संबंध जोड़ा जा सकता है, क्योंकि संगीत का सीधा संबंध मन से है। हृदय ही कला का उद्गम स्थल है और मनोविज्ञान हृदय एवं मन का अध्ययन करता है। यह मनुश्य की अन्तर्निहित भावनाओं एवं व्यवहारों के परिप्रेक्ष्य में मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। संगीत कला भी मन की आंतरिक भावनाओं का उद्गार होने के कारण मनुश्य की मनःस्थिति एवं मस्तिश्क से संबंधित है। इतना ही नहीं मनोविज्ञानिक ढंग से संगीत शिक्षण के व्यवहार की भी अहम भूमिका रहती है और यही व्यवहार संगीत के मनोविज्ञान के अन्तर्गत त्वरित प्रगति के लिए अतयंत आवश्यक माना जाता है।

संदर्भ

1. तिवारी, डॉ० किरण. संगीत एवं मनोविज्ञान. कनिष्ठ पब्लिशर दरियागंजः नई दिल्ली. पृष्ठ **90.**
2. वही. पृष्ठ **91.**
3. कुलकर्णी, डॉ. वसुधा. भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान. राजस्थानी ग्रथांगारः जोधपुर. पृष्ठ **60.**
4. वही. पृष्ठ **61.**
5. चटर्जी, पौलमी. संगीत का शैक्षिक मनोविज्ञान. विश्वविद्यालय प्रकाशनः वाराणसी. पृष्ठ **30.**